Date – 05/08/2020

Dr. Sanehlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's College, Samastipur
Email Id. – Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. – 8409587640

Class – B.A. – II (Hons.)

Topic – Abhihitaanvayavaad and Anvitaabhidhaanavaad Mimamsa Philosophy.

Scanned with CamScanner

अभिहितान्वयवाद एवं अन्वितभिधानवाद

जब हम किसी सार्थक वाक्य को सुनते हैं तो हमें अर्थ का बोध होता है। वाक्यार्थ बोध के संबंध में दो प्रकार के प्रश्न उत्पन्न होते हैं।

(1) वाक्य का अर्थ समग्र वाक्य से निकलता है या सिर्फ पदों के अर्थों के मिलने या योग से निकलता है।

(2) क्या वाक्य में विद्यमान शब्दों का स्वतंत्र अर्थ होता है या वे सापेक्ष रूप से ही अपना अर्थ प्रकट करते हैं। मीमांसा दर्शन में इस समस्या के समाधान हेतु दो दृष्टियाँ हैं-

(i) कुमारिल भट्ट का अभिहितान्वयवाद (ii) प्रभाकर का ~~अन्वितभिधानवाद~~

अभिहितान्वयवाद : शब्दों की स्वतंत्र अर्थसत्ता और उसके मेल से विशेष विचार कल्पना की उत्पत्ति ही 'अभिहितान्वयवाद' कहलाता है। कुमारिल के अनुसार वाक्यार्थ बोध विभिन्न पदार्थों में अंतर्निहित पारस्परिक संबंध बोध की शक्ति से होता है। वाक्य पदों का समूह है और वाक्यार्थ पदों की के पृथक-पृथक अर्थों का योग। पद में अभिधा नामक की शक्ति रहती है जो प्रत्येक पद के स्वतंत्र और निरपेक्ष अर्थ का बोध कराती है। तत्पश्चात् वे पदार्थ अपनी अंतर्निहित तात्पर्य शक्ति (आकांक्षा शक्ति) से पारस्परिक अन्वय का बोध कराते हुए एक पूर्ण वाक्यार्थ बोध में परिणत होते हैं। चूँकि यहाँ शब्दों द्वारा अभिहित (expressed) अर्थों का

Scanned with CamScanner

वाद में अन्वय (पारस्परिक संबंध) होता है, इसलिए इसे अभिहितान्वयवाद कहा जाता है। जिस प्रकार वन सिर्फ वृक्षों का योगमात्र है, वृक्षों से पृथक उसकी कोई सत्ता नहीं है, उसी प्रकार वाक्यार्थ बोध पदार्थों का संसर्ग-समूह मात्र है।

अन्विताभिधानवाद: वाक्यार्थ बोध पदार्थों का योग मात्र नहीं है बल्कि सम्पूर्ण वाक्य से उसका बोध होता है। वाक्य में आए हुए पद स्वतंत्र एवं पृथक अर्थ का बोध नहीं कराते अपितु वे परस्पर सापेक्ष अर्थ का ही बोध कराते हैं क्योंकि अभिप्राय, संदर्भ एवं परिस्थिति से पूर्णतः स्वतंत्र पद का भाषायी प्रयोग संगत नहीं है। स्पष्ट है पद अन्वित होकर अन्वय का अवबोध कराते हैं। वाक्य में प्रयुक्त होते ही शब्द के सामान्य, किसी अर्थ का बोध हो जाता है और संदर्भानुसार अन्य पदों से समन्वित उसका विशिष्ट अर्थ प्रकट होता है। इस प्रकार शब्द अन्वित अर्थ का ही कथन करते हैं। उत्तरवर्ती विट्गेन्सटाइन भी यह मानते हैं कि शब्द का कोई निश्चित सामान्य अर्थ नहीं होता बल्कि उसका अर्थ संदर्भ (context) पर निर्भर करता है।

संक्षेप में, कुमारिल भट्ट के अनुसार भाषा की मूल इकाई स्वतंत्र पद एवं पदार्थ हैं जबकि प्रभाकर वाक्य एवं वाक्यार्थ को भाषा की मूल इकाई के रूप में स्वीकार करते हैं।

Scanned with CamScanner